अनुग्रह से उद्धार

इफिसियों 2:5 में हम पढ़ते हैं, ''जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो [परमेश्वर ने] हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)।'' बाइबल में अनुग्रह को बहुत महत्व दिया गया है। बार-बार इसका उल्लेख हुआ है। केवल पौलुस के लेखों में ही ''अनुग्रह'' शब्द का इस्तेमाल 88 बार हुआ है। वास्तव में, नया नियम अनुग्रह को इतना महत्वपूर्ण मानता है कि कहा गया है कि हमारा उद्धार इसके द्वारा ही हुआ है। हमारा यह पाठ इसकी घोषणा करता है। रोमियों 3:24 में पौलुस ने कहा है कि हम ''अनुग्रह से ... धर्मी ठहराए जाते हैं।''

अनुग्रह का क्या अर्थ है?

''अनुग्रह'' का अर्थ है ''कृपा।'' हमारा उद्धार परमेश्वर की कृपा से होता है, जिसके हम योग्य नहीं थे। मनुष्य ने अपनी दुष्टता से अपने आप को दूर कर लिया था (यशायाह 59:1, 2; रोमियों 3:23)। परमेश्वर से मिलाने के लिए वह कुछ भी नहीं कर सकता था। वह क्षमा के योग्य होने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता था। परन्तु, परमेश्वर ने मनुष्य से यहां तक प्रेम किया कि वह मनुष्य को क्षमा दिलाने हेतु कोई माध्यम उपलब्ध करवाना चाहता था। उस माध्यम को उपलब्ध करवाने में जो कुछ परमेश्वर ने किया उस सब को ''अनुग्रह'' शब्द में देखा जा सकता है। इसमें ठीक-ठीक क्या शामिल है?

(1) *इसमें परमेश्वर के प्रेम का दान, मसीह शामिल है।* धर्मी ठहराने की महान योजना परमेश्वर के मन में उपजी थी। फिर इस योजना ने उसके पुत्र में रूप ले लिया। वह मसीही पद्धति अर्थात हमारे विश्वास के विषय का केन्द्र और हमारी आशाओं का लंगर है। परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने पाप के प्रायश्चित के लिए यीशु को दे दिया (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 2:2)। यह परमेश्वर का अनुग्रह ही था जिसके कारण उसने संसार को यीशु को दे दिया।

(2) *मसीह का लहू शामिल है।* इब्रानियों 9:22, 1 यूहन्ना 1:7 और इफिसियों 1:7 बताते हैं कि छुटकारा उसके बहने वाले लहू द्वारा है। यह पूर्वत: ईश्वरीय कार्य था। मनुष्य ने इस बलिदान के योग्य होने का कोई कार्य नहीं किया अर्थात यह बलिदान तो अनुग्रह के कारण ही था। उसने हमारे स्थान पर आकर हमारे लिए मौत को सहा।

(3) *''अनुग्रह" शब्द में पवित्र आत्मा और मनपरिवर्तन में उसका काम समाविष्ट है।* आत्मा हमें धर्मी ठहराता है (1 कुरिन्थियों 6:11)। आत्मा ने, प्रेरितों और प्रेरणा प्राप्त अन्य लोगों के द्वारा संसार के लिए सुसमाचार दिया। आत्मा, सुसमाचार के द्वारा पापियों को परिवर्तित करता है (इफिसियों 6:17)।

(4) *सुसमाचार उद्धार दिलाता है* (रोमियों 1:16)। सुसमाचार का संदेश निश्चय ही पापियों को बचाने के लिए परमेश्वर की योजना में शामिल है। यह निश्चय ही मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की कृपा या अनुग्रह में शामिल है।

फिर, इन सभी बातों में अनुग्रह की प्रणाली शामिल है। ''अनुग्रह'' की धारणा अब परमेश्वर, मसीह, पवित्र आत्मा, सुसमाचार और पापियों को बचाने के लिए इन सब के द्वारा किए गए काम में सम्मिलित है।

क्या उद्धार केवल अनुग्रह से ही है?

''क्या उद्धार केवल अनुग्रह से ही है?'' से हमारे कहने का अर्थ होता है, ''क्या उद्धार केवल स्वर्ग के प्रयासों पर निर्भर है?'' कुछ लोगों का दावा यही है। यदि ऐसा है तो इनमें से एक निष्कर्ष पर पहुंचना आवश्यक है: या तो परमेश्वर सब लोगों का उद्धार करेगा, या वह कुछ लोगों को चुनकर बिना किसी शर्त के उनका उद्धार करेगा। ''केवल अनुग्रह'' से उद्धार की धारणा हमें सब लोगों के उद्धार को मानने या पूर्व निर्धारित या बिना शर्त के चयन में विश्वास रखने को बाध्य करती है। यद्यपि ये दोनों शिक्षाएं धार्मिक लोगों द्वारा सिखाई गई हैं, परन्तु इनके गलत होने से इनकार नहीं किया जा सकता। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि कुछ लोगों का नाश होगा (मत्ती 7:13)। यह कहना कि परमेश्वर बिना शर्त के कुछ लोगों को चुनता है और दूसरे सभी लोगों को दोषी ठहराता है, उसे पक्षपात करने वाले परमेश्वर के रूप में दिखाना है, जो कि पवित्र शास्त्र कहता है कि वह नहीं है (रोमियों 2:11)। ''केवल अनुग्रह'' की शिक्षा सही नहीं हो सकती।

क्या उद्धार केवल अनुग्रह से ही है?

परमेश्वर के अनुग्रह या कृपा को स्वीकार करने वालों का उद्धार अनुग्रह से होगा। कोई भी दान पाने के लिए उसे स्वीकार करना आवश्यक है। कई लोग यह नहीं समझ पाते कि यदि कुछ करना ही है तो उद्धार अनुग्रह से कैसे हो सकता है। फिर भी, जैसा कि हम देखेंगे, सत्य यही है कि उद्धार अनुग्रह से ही होता है।

हमें प्रकृति से एक सरल सा उदाहरण मिलता है। यह परमेश्वर का अनुग्रह ही है कि हमें भोजन मिलता है। हम प्रतिदिन के भोजन के लिए प्रार्थना करते हैं और विश्वास करते हैं कि भोजन हमें परमेश्वर ही देता है, फिर भी हमें अपना योगदान देना पड़ता है। गेहूं उगाने से लेकर काटने और रोटी बनाने तक किए जाने वाले कार्य के बावजूद, यह परमेश्वर की ओर से दान ही है। हम यह दान परमेश्वर के प्राकृतिक नियमों को पूरा करके प्राप्त करते हैं।

उत्पत्ति 6:8 हमें सूचित करती है कि नूह पर परमेश्वर के ''अनुग्रह'' की दृष्टि बनी रही। परमेश्वर ने उसके बचने की योजना बनाई और उसे बता दी। यह उसका अनुग्रह या कृपा ही थी। परन्तु, अभी भी नूह का योगदान जरूरी था अर्थात उसके लिए जहाज़ को बनाना आवश्यक था। जैसे कि इब्रानियों के लेखक ने घोषणा की, उसका बचाव विश्वास से आज्ञा मानने के कारण हुआ था (इब्रानियों 11:7)।

यहोशू 6:2 के अनुसार इस्राएलियों को यरीहो नगर प्रभु की ओर से दिया गया था। यह एक दान था, जो अनुग्रह से दिया गया था। फिर भी, उन्हें बताया गया था कि उस नगर पर कैसे कब्जा करना है, और जो नगर परमेश्वर की ओर से उन्हें दिया गया था उसको लेने के लिए उनकी ओर से कार्य करने में एक सप्ताह लग गया। अनुग्रह का यह अर्थ नहीं कि इसमें आज्ञा मानने की आवश्यकता नहीं।

शास्त्र में से लिए गए इस अंश पर फिर से ध्यान दीजिए। पौलुस ने कहा, कि इफिसियों का उद्धार अनुग्रह से हुआ था। प्रेरितों 19 में हम उनके मनपरिवर्तन का विस्तार से अध्ययन कर सकते हैं। वहां हम देख सकते हैं कि उनके मनपरिवर्तन में पौलुस द्वारा सुसमाचार के प्रचार में माध्यम मनुष्य को ही बनाया गया है। उनके मनपरिवर्तन के लिए विश्वास और बपतिस्मा आवश्यक था। उस घटना की ओर पीछे मुड़कर देखते हुए, पौलुस ने कहा था कि उनका उद्धार अनुग्रह से हुआ है। उनके मनपरिवर्तन का अध्ययन करके हम जान सकते हैं कि अनुग्रह से उद्धार कैसे होता है।

अब, यदि हम देख सकते हैं कि इन सभी घटनाओं में आशीष अनुग्रह से मिली थी, और आशीष पाने वाले का योगदान अनिवार्य था, तो हम यह क्यों नहीं मान सकते कि हमारा उद्धार अपनी ओर से आज्ञा मानने की कुछ बातों को नकारे बिना अनुग्रह से ही होता है? उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा को मानकर भी हमारा उद्धार अनुग्रह से ही होता है। निश्चय ही हम यह दावा नहीं कर सकते कि आज्ञा मानने के उन आसान कार्यों को करके हमने उद्धार कमा लिया है!

उद्धार अनुग्रह से ही है; हमने कोई सराहनीय कार्य करके इसे कमाया नहीं है। हम तो परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञा को मानने के बाद भी निकम्मे दास ही हैं (लूका 17:10)। हमें अहसास तो है कि हम पर परमेश्वर की कृपा आज्ञाकारी विश्वास से ही होती है, परन्तु फिर भी विश्वास से उसकी बात मानकर हम गा सकते हैं, कि उसका अनुग्रह अद्‌भुत है! कितना अच्छा लगता है!